सौदामनी

अक्तूबर – दिसम्बर, 2014 | केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग | खण्ड–I अंक–3

संपादकीय

संपादकीय लिखते हुए भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की पंक्तियां स्मरण आती हैं:–

"बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल"।

केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग में अनेक सदस्यों की हिंदी के प्रति निष्ठा एवं अनुराग को एक त्रैमासिक पत्रिका के माध्यम से प्रदर्शित करने की इच्छा के कारण 'सौदामिनी' का जन्म हुआ। रंगों का चयन, तस्वीरों का संकलन, विभिन्न नामों पर आलोचना एवं लेखों का संग्रहण, इन सब कार्यों में संपादक मंडल को विभिन्न सूत्रों से समर्थन प्राप्त हुआ है।

इस पत्रिका के शुभारंभ की रूपरेखा तैयार करते समय हमारा उद्देश्य था कि हम आयोग की विभिन्न क्षेत्रों की उपलब्धियों की अद्यतन जानकारी स्टाफ को उपलब्ध करवाएं। हम सभी के लिए यह हर्ष का विषय है कि हम अपने इस कार्यक्रम को इस पत्रिका में निश्चित आकार देने का सफलतापूर्वक प्रयास कर रहे हैं। मुझे प्रसन्नता है कि इस कार्य में प्रत्येक स्तर के स्टाफ से रचनात्मक सहयोग प्राप्त हो रहा है। इस अंक में भी आयोग में समय समय पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं/कार्यक्रमों के सचित्र विवरण के साथ साथ ऊर्जा क्षेत्र से संबंधित महत्वपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक सामग्री को उपलब्ध करवाया जा रहा है।

मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि यह अंक हमारे स्टाफ एवं अन्य सभी पाठकों के लिए अत्यंत उपयोगी एवं संग्रहणीय होगा।

(शुभा शर्मा)
सचिव एवं अध्यक्ष-रा.भा.का.स.

सतर्कता जागरूकता सप्ताह, 2014 का अनुपालन

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान प्रतिज्ञा वाचन

- केन्द्रीय सतर्कता आयोग के निर्देशानुसार केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग में सतर्कता जागरूकता सप्ताह, 2014 (दिनांक 27.10.2014 से 1.11.2014 तक) मनाया गया। दिनांक 27.10.2014 को सभी स्टाफ सदस्यों द्वारा सामूहिक रूप से प्रतिज्ञा ली गई। इस अवसर पर आयोग के माननीय अध्यक्ष महोदय, सदस्यगण एवं समस्त वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित रहे एवं प्रतिज्ञा का सामूहिक वाचन किया गया।
- सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान कार्यालय के मुख्य स्थानों पर बैनरों को प्रदर्शित किया गया।
- भ्रष्टाचार उन्मूलन एवं उसे रोजमर्रा की जीवन शैली से दूर करने के लिए तथा स्टाफ सदस्यों में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए "भ्रष्टाचार उन्मूलन में तकनीक का सदुपयोग" विषय पर निबंध लेखन प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में कई प्रविष्टियां प्राप्त हुई एवं श्रेष्ठ निबंध को पुरस्कृत भी किया गया।
- निर्धारित विषय पर प्राप्त सभी निबंधों में सार्वजनिक सेवा प्रदान करने में उत्तरदायित्व की भावना के साथ साथ सामान्य जीवन में पारदर्शिता के महत्व को रेखांकित किया गया ताकि भ्रष्टाचार के उन्मूलन से संतुलित विकास का सपना पूरा किया जा सके।

विभिन्न गतिविधियां
सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन (दिनांक 28 नवम्बर 2014)

सभी स्तर के स्टाफ सदस्यों में सुपाठ्य, स्वच्छ एवं आकर्षक लिखावट के प्रति रूझान पैदा करने के उद्देश्य से सभी स्तर के स्टाफ सदस्यों के लिए हिंदी/अंग्रेजी सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में हिंदी/अंग्रेजी का एक–एक पैराग्राफ लिखने के लिए उपलब्ध करवाया गया जिसमें आयोग के अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साह से भाग लिया। इस सुलेख प्रतियोगिता में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

सौदामनी

अक्तूबर – दिसम्बर, 2014 | केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग | खण्ड–I अंक–3

हिंदी कार्यशाला का आयोजन

राजभाषा नीति की अपेक्षाओं और हिंदी में कामकाज को सरल बनाने के लिए समस्त स्टाफ सदस्यों हेतु दिनांक 22 अक्तूबर 2014 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्घाटन माननीया शुभा शर्मा, सचिव एवं अध्यक्ष–राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा किया गया। इस कार्यशाला में मूल पत्राचार में वृद्धि करने, धारा 3(3) के शत प्रतिशत अनुपालन करने एवं मानक मसौदों के प्रयोग पर बल दिया गया। इसके साथ ही प्रतिभागियों को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की प्रोत्साहन पुरस्कार योजनाओं की विस्तार से जानकारी दी गई। कार्याशाला में बड़ी संख्या में वरिष्ठ अधिकारियों ने भी भाग लिया जिसमें हिंदी के रोजमर्रा के कामकाज में आने वाली व्यवहारिक समस्याओं पर खुलकर चर्चा की गई।

हिंदी कार्यशाला के दौरान वरिष्ठ अधिकारीगण की उपस्थिति

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में पारस्परिक विचार विमर्श

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक

दिसम्बर 2014 को समाप्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक दिनांक 30.12.2014 को आयोग के परिसर में आयोजित की गई। आयोग की सचिव सुश्री शुभा शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित इस तिमाही बैठक में सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन और हिंदी के प्रचार प्रसार पर विशेष बल दिया गया। इस बैठक में पिछली तिमाही के दौरान हिंदी की विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यक्रमों पर विस्तार से चर्चा की गई एवं आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा भी तैयार की गई। इस बैठक में राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सभी सदस्यों ने भाग लिया।

भारतीय ग्रिड का पूर्ण इंटीग्रेशन

31 दिसम्बर 2013 का दिन भारत के विद्युत क्षेत्र के लिए स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाने वाला दिन है। इसी दिन 20:25 बजे जब 765 केवी रायपुर सोलापुर लाइन को पहली बार चालू किया गया तो देश का दक्षिणी क्षेत्र भी बाकी अन्य क्षेत्रों के साथ सिंक्रोनाइज हो गया पर इस प्रणाली का पूरा फायदा तब तक नहीं हो सकता जब तक इसका दूसरा सर्किट भी चालू नहीं हो जाता। अंततः दूसरा सर्किट भी 30 जून 2014 को चालू कर दिया गया जिससे दक्षिणी क्षेत्रा को 1200-1500 मेगावाट बिजली का अतिरिक्त प्रवाह हो सकेगा। अब ज्यादा आसानी से क्षेत्रीय विविधता का लाभ उठाया जा सकेगा व किसी भी ग्रिड व्यवधान में दूसरे को तुरंत सहायता दी जा सकेगी जिससे पूरे भारत में ग्रिड स्थिरता बढ़ेगी।

भारत, अमेरिका व चीन के बाद बिजली उत्पादन में संसार का तीसरा देश है पर हम प्रति व्यक्ति बिजली उपयोग के स्थान में बहुत पीछे है। इस मामले में "ब्रिक" देशों में सबसे पिछड़ा है। देश की तीव्र प्रगति के लिए बिजली क्षेत्र की प्रगति जरूरी है।

संसार में लगभग 140 करोड़ लोगों को बिजली उपलब्ध नहीं हैं जिनमें 30 करोड़ भारतीय है। ऊर्जा विकास का मुख्य चालक है। बिजली की उपलब्धता के बिना बच्चों की शिक्षा सुनिश्चित नहीं हो सकती। देश को स्त्रियां को चक्की चलाने में, पानी खीचने और ढोने में श्रम व वक्त लगाना पड़ता है जो बिजली के मिलने से बड़ी आसानी से हो जाता है। इस समय का उपयोग वह ज्यादा उत्पादन कार्यों में लगा सकती है जिससे घर की घर की आय बढ़ेगी और भुखमरी घटती है।

'वन नेशन – वन ग्रिड' का सपना अब पूर्ण हो गया है। इससे देश में संकुलता कम करने में सहायता मिलेगी व पवन और ऊर्जा स्रोतों को असानी से मुख्य धारा से जोड़ा जा सकेगा। 'सबके लिए बिजली' के बड़े सपने को पूरा करने के लिए राष्ट्रीय ग्रिड का अखंड जुडना वास्तव में मील का एक पत्थर है।

राष्ट्रीय ग्रिड इंटीग्रेशन के बाद अगला पड़ाव सभी सार्क देशों को बड़ी भारतीय प्रणाली में जोड़ना होगा जिससे पड़ोसी देशों के साथ मिलकर पूरे सार्क क्षेत्र में बिजली का व्यापार बिना किसी गतिरोध के हो सकेगा।

(विक्रम सिंह)
उप प्रमुख (इंजीनियरिंग)

सौदामनी

अक्तूबर – दिसम्बर, 2014 | केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग | खण्ड–I अंक–3

मैराथन दौड़ में भाग लेते हुए अधिकारीगण एवं सभी स्तर का स्टाफ

अन्य गतिविधियां

विगत 21 नवम्बर 2014 को नई दिल्ली में एयरटेल हाफ दिल्ली मैराथन प्रतियोगिता आयोजित की गई। अधिकारियों/कर्मचारियों के बौद्धिक एवं शारीरिक विकास के लिए इस कार्यक्रम की महत्ता लेखांकित कि गई। इस कार्यक्रम के अंतर्गत हो रही 21.753 किमी की दौड़ प्रतियोगिता के आयोजन में 4 अधिकारियों ने भाग लिया साथ ही 6 किलामीटर की ग्रेट दिल्ली रन प्रतियोगिता में 23 कर्मचारियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में आयोग के विभिन्न स्तर के कुल 27 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

ऊर्जा क्षेत्र की समस्याएं और समाधान

पुरस्कृत निबंध

वर्तमान युग की तेज जीवन शैली ने मनुष्य की तीन प्रमुख आवश्यकताओं (रोटी, कपड़ा और मकान) में एक नई आवश्यकता को जोड़ दिया है। इस आवश्यकता को हम ऊर्जा का नाम दे सकते हैं। वैसे तो ऊर्जा की जरूरत इस संसार के सभी जीवित प्राणियों को है परन्तु मनुष्य जो कि सबसे समझदार प्राणी है, उसने इस जरूरत को दिन प्रतिदिन बढ़ाया है। ऊर्जा के उपयोग से मनुष्य ने बहुत सारी नई खोजें की। यह प्रक्रिया पिछले हजारों सालों से चलती आ रही है। इस प्रक्रिया में ऊर्जा की जरूरतों को पूरा करने के लिए मनुष्य ने पहले क्षय स्रोतों का दोहन करना शुरू किया। अक्षय स्रोतों का उपयोग काफी कम होता था क्योंकि अक्षय स्रोत के दोहन के लिए पर्याप्त तकनीक प्राचीन काल में उपलब्ध नहीं थे। नई तकनीक की खोज के साथ ही ऊर्जा आम लोगों तक पहुंचने लगी और धीरे धीरे विश्वस्तर पर लोगों ने ऊर्जा का उपयोग अपने जीवन को सरल बनाने में करने लगे। ऊर्जा का दोहन विश्व स्तर पर होने से क्षय स्रोतों पर दबाव बढ़ता गया और वर्तमान युग में यह समस्या विश्व के हर एक देश में देखी जा रही है।

विश्वस्तर पर ऊर्जा के क्षेत्र में देखी जानी वाली समस्याओं में प्रमुख है क्षय स्रोतों का घटता भंडार, अक्षय स्रोतों के दोहन के लिए पर्याप्त तकनीक की कमी, सरकार और निजी संस्थानों द्वारा अक्षय स्रोतों के विकास के लिए पर्याप्त धन न उपलब्ध कराना, जनसंख्या का बढ़ता दबाव, औद्योगिकरण, ऊर्जा संरक्षण के अपर्याप्त उपाय और आम लोगों की ऊर्जा संरक्षण के प्रति उदासीनता है।

बढ़ती आबादी को भोजन, रोजगार एवं आवगमन के साधन उपलब्ध कराने के ऊर्जा की मांग को पूरा करने के लिए विदेशों से ऊर्जा के स्रोत का आयात करता है। इस क्षेत्र में पेट्रोलियम पदार्थ सबसे ऊपर है। भारत अपनी आवश्यकता का केवल 10 प्रतिशत ही खुद से उत्पादन करता है और 90 प्रतिशत विदेशों से आयात करता है। बिजली के क्षेत्र में भी हमने आजादी के बाद से काफी तरक्की की है लेकिन अभी हम पूरी आबादी को बिजली उपलब्ध नहीं करवा पाएं हैं। धीरे धीरे आने वाले सालों में यह समस्या काफी गंभीर होने वाली है और क्षय स्रोत्रों और दबाव बढ़ने वाला है। दूसरी सबसे बड़ी समस्या है कि सरकार की नीतियों ने क्षय ऊर्जा के स्रोत्रें का विकास करने वालों की समस्याओं को और बढ़ाया है। अक्षय स्रोतों के विकास के प्रति सरकार की उदासीनता सबसे बड़ी समस्या है। क्षय स्रोत तो आज से 100 साल 200 साल में समाप्त हो जाएंगे। परन्तु अक्षय स्रोत पहले भी हो और आगे आने वाले हजारों सालों तक रहेंगे।

(1) अक्षय स्रोतों को बढ़ावा

(2) अक्षय स्रोतों के विकास के लिए निजी क्षेत्र को बढ़ावा देना तथा उन्हें कुछ छूट देना तथा उन्हें कुछ छूट देना ताकि वे विश्वस्तर पर दूसरे निजी उद्यमों से प्रतियोगिता कर सके।

(3) आम जनता को ऊर्जा संरक्षण के फायदो को समझना जिससे यह हमारे जीवन शैली में आ जाए।

(4) बढ़ती आबादी पर लगाम के ठोस कदम। उपरोक्त कदम ऐसे कदम है जिन्हें हम केवल ऊर्जा संरक्षण को ध्यान मं रख कर नहीं उठा सकते है। इसलिए सरकार को चाहिए कि वह एक ऐसा कार्यक्रम बनाए जो क्षेत्र आधारित हो और उसका कदम दर कदम कार्यान्वयन किया जा सके।

(अगम कुमार)
तकनीकी अधिकारी

सौदामनी

अक्तूबर – दिसम्बर, 2014 | केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग | खण्ड–I अंक–3

पुरस्कृत अनुच्छेद

स्वच्छ भारत : मेरा सपना

स्वच्छता मनुष्य का सामान्य स्वभाव है। ये मनुष्य को तुरन्त आत्मिक संतोष एवं शान्ति प्रदान करती है। मेरे स्वप्न के स्वच्छ भारत की शुरूआत व्यक्तिगत स्तर से होगी पर सामाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर ऐसे स्वप्न को साकार करने के लिए व्यक्तिगत चेतना को समष्टिगत चेतना में परिवर्तित होना होगा। मेरे भारत में स्वच्छता बाह्य एवं आंतरिक दोनों प्रकार की होगी। व्यक्तिगत स्तर पर बाह्य स्वच्छता प्रत्येक नागरिक के व्यक्तित्व के विकास, रहन सहन में परिवर्तन, स्वस्थ एवं अनुशासित जीवन शैली के रूप में आयेगी। वहीं सामाजिक स्तर पर बाह्य स्वच्छता भारत में स्वानुशासित एवं स्वस्थ समाज का निर्माण करेगी। एक ऐसा समाज जो कि पर्यावरण के साथ समन्वय सीखेगा, प्राकृतिक स्रोतों को उपयोग उचित ढंग से करेगा। अनुपयोगी (कूड़ा कर्कट) वस्तुओं का वैज्ञानिक उपयोग कर सकेगा। मेरे स्वच्छ भारत की परिकल्पना जल एवं वायु की स्वच्छता जोकि भविष्य के लिये आवश्यक है वह भी शामिल होगी। ये सोच, ये वृतियों मेरे भारत को एक नई पहचान देंगी। आन्तरिक स्वच्छता की बात करें, तो मेरे भारत के नागरिकों को अपने आंतरिक कलुष को दूर करने का प्रयत्न करना होगा, ये उनके आत्मिक विकास में सहायक होगा। समष्टिगत स्तर पर आंतरिक स्वच्छता एक ऐसे भारत का निर्माण करेगी जो सामाजिक कुरीतियों से दूर, अपसंस्कृति के कुप्रभावों से दूर होगा जिसमें दीर्घकालीन उन्नति के बीज भी छिपे होंगे। इस प्रकार इस बाह्यान्तर स्वच्छता से एक ऐसे भारत का निर्माण होगा जिसमें सर्वागीण विकास की क्षमता होगी। परंतु मुझे अपने स्वच्छ भारत के सपने को साकार करने की पहल स्वंय से करनी होगी। स्वच्छता की गंगा को वास्तविकता की धरती में उतारने के लिए हममे से प्रत्येक को भागीरथ बनना होगा, क्योंकि मात्र एक भागीरथ से काम नहीं चलेगा। हमारी पुण्य संचयिता गंगा ने भगीरथ के पूर्वजों का उद्धार किया और हमने, उनकी संतानों ने, उसे ही प्रदूषित कर दिया। इस स्वच्छता की गंगा से न केवल हमारा बाहयान्तर शुद्ध होगा, वरन हम भविष्य के लिए एक आत्मविश्वासी, उन्नतिशील एवं स्वस्थ समाज की नींव भी रख सकेंगे। आइये इस महायज्ञ को हम सभी मनसा–वाचा–कर्मणा अपनी अपनी आहुति दे कर सफल बनायें एवं प्रकृति के ऋण से भी उऋण हों।

(प्रभात कुमार अवस्थी)
संयुक्त प्रमुख (वित्त)

सत्ता या सत्य

आज अर्जुन का प्रश्न नया है
सत्ता के साथ रहना है कि सत्य के संग चलना है?
सत्ता साधती स्वार्थ, सत्य का पत्र संघर्ष से भरा है?

संसार सत्ता से जोड़ता, संस्कार सत्य की ओर मोड़ता
पर दिखती सत्ता बदलती, सत्य सतत् शाश्वत खड़ा है।
सत्ता स्वार्थी आज का स्वार्थ खिंचती
सत्य निरंतर, स्थितप्रज्ञ पर एकाकी।
सत्ता स्वार्थ वश मूक बन जाती
सत्य की वाणी, सबके हित प्रखर हो जाती।

देखते है पर अपने आदर्श पुरूषों को सत्ता के साथ
कोई नहीं दे रहा सत्य का साथ
कोई चुप है सत्ता के भय से
कोई चुप है अधिकारों के छल से
किसी को है अस्तित्व बचाना
किसी को है हर हाल में बढ़ते जाना।

सत्ता आज धृतराष्ट्र है या गांधारी
पर सत्य को बन जाना है गांडीवधारी।
अर्जुन को जब लड़ना था एक ही महाभारत पर,
आज उसे लड़ना है रोज नया महाभारत।
पर सावधान!

सत्ता अभी भी अर्जुन को बहकाकर भेजती जयद्रथ के पीछे।
बध कर देती सत्य को, बना अभिमन्यु, घेरे के पीछे।
पर सत्ता से संघर्ष में, अगर सत्य को विजयी बनाना
काफी नहीं है खड़े रहना, पर अर्जुन को पड़ेगा तीर चलाना

सत्ता का दल शक्तिशाली, धन बल अभिमानी
त्याग तपस्या व वीरता धारण कर सत्य के सेनानी।
जीतना है यह संघर्ष न अर्द्धसत्य न दल से
विजयी होंगे हम निर्भय साहस, मर्यादा के बल से।

(विजय मेघाणी)
संयुक्त प्रमुख (इंजी)

संरक्षक
ए.के.सिंघल
सदस्य

www.cercind.gov.in

संपादक मंडल
शुभा शर्मा, सचिव
पी. राममूर्ति, सहायक सचिव
राजेन्द्र प्रताप सहगल
राजभाषा अधिकारी

कृपया इस पते पर अपनी प्रतिक्रिया भेजें :
केन्द्रीय विद्युत विनियामक आयोग
भूतल, चन्द्रलोक बिल्डिंग, 36 जनपथ,
नई दिल्ली–110001
Email : info@cercind.gov.in

इस पत्रिका में व्यक्त विचार लेखक के अपने है और इससे के.वि.वि.आ. की सहमति अनिवार्य नही है।